# श्री ललिता कोट्यर्चन सत्रयाग समिति

## विद्वत् परिषद्

महामहोपाध्याय प्रो. हृदयरंजन शर्मा
प्रो. कमलाकान्त त्रिपाठी
प्रो. गोपाल प्रसाद शर्मा
प्रो. शीतला प्रसाद पाण्डेय
प्रो. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
प्रो. उपेन्द्र कुमार त्रिपाठी
प्रो. विजयशंकर शुक्ल

## यज्ञ समिति

प्रो. पतंजलि मिश्र
पं. त्रिलोकीनाथ जैतली
श्री कृष्णानन्दनाथ
पं.शिवम कुमार चौबे
पं.आर्य शर्मा
श्रीमती भारती हिसारिया
श्रीमती पल्लवी विवेक मोहित
पं. शशिकान्त पांडेय
पं. प्रद्योत भट्टाचार्य
पं.मृत्युंजय त्रिपाठी
श्रीकांत तिवारी
पं.ओमनारायण मिश्र
डॉ. पुष्पा त्रिपाठी

## आयोजन समिति

श्री हिमांशु कुमार
(आई.ए.एस., पूर्व अपर मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन)
श्रीमती स्मीनू जिंदल, दिल्ली
श्री विवेक चतुर्वेदी, मुंबई
डॉ. अपूर्व चतुर्वेदी, गाजियाबाद
श्री दयानिधि मिश्र,वाराणसी
श्री सुनील मिश्रा,लखनऊ
डॉ. रवि अग्रवाल, वाराणसी
श्री मिलन टंडन, वाराणसी
श्री विनोद राम त्रिपाठी
(मुख्य विकास अधिकारी, कौशाम्बी)
श्री पीयूष मोहित, गुडगांव
श्रीमती विनीता हिसारिया, अमेरिका
श्री जुगल भगत, कोलकाता
श्री राघवेन्द्र उपाध्याय, विन्ध्याचल
श्री अभिषेक शर्मा, गुवाहाटी
श्रीमती स्मिता चौधरी
(आई.ए.ए.एस.पूर्व उपनियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक भारत सरकार)
श्री अनंतदेव तिवारी
(पूर्व डी.आई.जी.)
श्री रविशंकर शुक्ला, वाराणसी
श्री राजेन्द्र सिंह, वाराणसी
श्री अनूप शर्मा, गाजियाबाद
श्रीमती नेहा श्री हितेश अग्रवाल
(अतिरिक्त जिला न्यायाधीश, वाराणसी)
श्रीमती सीमा श्री उमेश पोद्दार, मुंबई
श्री कपिल सैलट, वाराणसी
श्री प्रवीण बियाला, कोलकाता
डॉ. रीता कुमार, अमेरिका

॥ श्रीविद्या विजयतेतराम् ॥

# श्रीललिता कोट्यर्चन सत्रयाग

(श्रीविद्यादेशिकप्रवर पूज्य गुरुवर्य शिवसायुज्यप्राप्त आचार्य
श्री दत्तात्रेयानन्दनाथ जी (पं. सीताराम कविराज) के आविर्भाव शताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में
श्रीमाता का एक करोड मन्त्रों से विविध द्रव्यों से अर्चन)

# आमन्त्रण-पत्रिका

पौष शुक्ल पूर्णिमा शनिवार से
माघ शुक्ल पंचमी शुक्रवार (२०८२ वि०) पर्यन्त
(दिनाङ्क ०३ जनवरी २०२६ से २३ जनवरी २०२६ तक)

स्थान

## श्रीविद्या साधना पीठ

शिवसदन, नगवा, वाराणसी

॥ श्रीविद्या विजयतेतराम् ॥

# श्रीललिता कोट्यर्चन सत्रयाग

सम्मान्य महोदय,

श्रीयन्त्र की अधिष्ठात्री श्री ललिता महात्रिपुरसुन्दरी की महती अनुकम्पा से यह अत्यन्त हर्ष का अवसर प्राप्त है कि श्रीविद्यासाधना पीठ के संस्थापक गुरुवर्य श्रीविद्यादेशिकप्रवर आचार्य श्री दत्तात्रेयानन्दनाथ जी (पं. सीताराम कविराज जी) के आविर्भाव शताब्दी महोत्सव के महनीय उपलक्ष्य में श्रीविद्या साधना पीठ के न्यासीगण एवं शिष्यवृन्द द्वारा श्री विद्या साधना पीठ के तत्त्वावधान में चतुर्दश श्रीललिता कोट्यर्चन सत्रयाग का आयोजन शताधिक दीक्षित साधक-साधिकाओं के सहयोग से आयोजित किया जा रहा है।

यह विशिष्ट आयोजन पौष शुक्ल पूर्णिमा से माघ शुक्ल पंचमी (२०८२ वि०) तदनुसार दिनांक ०३ जनवरी शनिवार से २३ जनवरी शुक्रवार २०२६ तक की तिथियों में सम्पन्न होगा। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत श्री महागणपति उपासना, श्रीललिताकोट्यर्चन, सुवासिनी-कुमारी आदि पूजन, साधकों का मार्गदर्शन तथा अन्य आध्यात्मिक आयोजन अनुष्ठित होंगे।

आप श्रीविद्या के उपासक, साधक हैं, अतः आपसे अनुरोध है कि इस महनीय आयोजन में सम्मिलित होकर पुण्यार्जन का लाभ प्राप्त करें एवं महोत्सव की श्रीवृद्धि में सहभागी बनें।

भवदीय

प्रकाशानन्दनाथ

(अध्यक्ष)

| प्रो० श्रीकिशोर मिश्र | विजय सिंह | डॉ. दीपक कुमार शर्मा |
|---|---|---|
| सचिव | उपाध्यक्ष | सह-सचिव |

॥ श्रीविद्या विजयतेतराम् ॥

# श्रीललिता कोट्यर्चन सत्रयाग

पौष शुक्ल पूर्णिमा शनिवार से माघ शुक्ल पंचमी शुक्रवार (२०८२ वि०) पर्यन्त
(दिनाङ्क ०३ जनवरी २०२६ से २३ जनवरी २०२६ तक)

## कार्यक्रम

### शुभारम्भ

पौष शुक्ल पूर्णिमा, शनिवार दि.०३/०१/२०२६

| | |
|---|---|
| प्रातः ०७.०० बजे से | श्रीमहागणपति तान्त्रिक होम, पंचावरणपूजनपूर्वक श्रीसिद्धलक्ष्मी-सहितश्रीमहागणपति सहस्रमोदकार्चन, निगमोक्त पंचांग पूजनोपक्रम-सहित श्रीललिता दैनिक सपर्या |

### श्रीललिता कोटि-अर्चन

माघ कृष्ण प्रतिपद् रविवार दि.०४/०१/२०२६ से
माघ शुक्ल तृतीया बुधवार दि.२१/०१/२०२६ (प्रतिदिन)

| | |
|---|---|
| प्रातः ०५.०० बजे से | श्री महागणपतिक्रम सहित श्रीचक्र की नवावरण महापूजा |
| प्रातः ०८.३० बजे से | विभिन्न द्रव्यों के द्वारा श्रीललिता कोटि-अर्चन |
| मध्याह्न १२.०० बजे से | फलाहार एवं विश्राम |
| अपराह्न ०१.०० बजे से | पुनः श्रीललिता कोटि-अर्चन |
| सायं ०४.०० बजे | महानैवेद्य आरती , पुष्पांजलि एवं तत्वशोधन |

### श्रीललिता होम एवं रात्रि-जागरण

माघ शुक्ल चतुर्थी बृहस्पतिवार दि.२२/०१/२०२६

| | |
|---|---|
| प्रातः ०५.०० बजे से | श्री महागणपतिक्रमसहित दैनिक सपर्या, सर्वतोभद्रमंडल पूजन,कलश स्थापन, श्री चक्रराज का महाभिषेक एवं चतुःषष्टिउपचारपूर्वक महापूजा |
| प्रातः ०९.०० बजे से | श्रीललिता होम |
| सायं ०६.०० बजे से | शास्त्रीय भक्ति संगीत, श्रीमाता के समाराधनपूर्वक रात्रि जागरण |

### समापन समारोह एवं पूर्णाहुति

माघ शुक्ल पंचमी शुक्रवार, दि.२३/०१/२०२६

| | |
|---|---|
| प्रातः ०५.०० बजे से | श्री महागणपतिक्रम सहित श्रीचक्र की नवावरण महापूजा |
| मध्याह्न १०.०० बजे से | सुवासिनी, कुमारी, बटुक पूजन, साधक– साधिका सम्मान, विद्वद् गोष्ठी एवं आशीर्वचन |
| मध्याह्न १२.०० बजे से | दिव्य प्रसाद ग्रहण पूर्वक सत्र-याग की सम्पूर्ति |

## श्रीविद्या साधना पीठ का चतुर्दश सत्रयाग

वेद ज्ञानराशि के भण्डार हैं और वैदिक विद्याओं का सार तन्त्रशास्त्र भगवान् परम शिव द्वारा प्रणीत है। वैदिक साधना की परम्परा को व्यापक करते हुए शिवप्रणीत तन्त्रशास्त्र में समस्त वर्णों और स्त्रियों का भी विशेष अधिकार है। इसलिये आचार्य शङ्कर ने अद्वैतवेदान्त सिद्धान्त की प्रतिष्ठा करके उसकी समृद्धि के लिए तन्त्र-आगम विद्याओं का निर्देश किया। उनके द्वारा प्रणीत तन्त्रसाहित्य से यह प्रमाणित है।

## रहस्य-सहस्रनाम और अर्चन के अधिकारी

ब्रह्माण्डपुराण में भगवान् हयग्रीव ने अगस्त्य ऋषि को श्रीयन्त्र की विविध पूजा विधान वर्णन करके समग्र पूजाओं को पूर्ण करने वाले ललितासहस्रनाम का उपदेश किया अन्य सहस्रनामों से इसकी विशिष्टता का वर्णन करके इन नामों को मन्त्रात्मक प्रतिपादित किया। श्रीयन्त्र की उपासना करने वाले साधक समुदाय को इन नामों का पारायण एवं अर्चन करना परमावश्यक है, इससे न्यूनातिरिक्त पूजा की पूर्णता हो जाती है। सहस्रार्चन, लक्षार्चन, कोटि-अर्चन के रूप में इनका अनुष्ठान होता है। श्रीयन्त्र का पात्रासादनपूर्वक नवावरण अर्चन करके प्रतिनाम से कुंकुम, अक्षत, पुष्प, फल, बिल्वपत्र आदि वस्तुओं से कोटिसंख्या पूर्त्यर्थ अर्चन किया जाता है। श्रीविद्या-अन्तर्गत किसी मन्त्र से दीक्षित साधक ही इसका अधिकारी होता है।

## कोटि-अर्चन सत्रयाग

ललिता सहस्रनाम स्तोत्र की दस हजार आवृत्ति होने से एक कोटि अर्चन सम्पन्न होता है। अतः इसकी विशालता को देखकर इसको सत्रयाग का रूप दिया गया है। तेरह दिन से अधिक और अनेक ऋत्विजों से सम्पन्न होने वाला यज्ञ सत्रयाग कहा जाता है। शास्त्रों में इसका अतिशय महत्त्व वर्णित है।

पूज्य गुरुदेव श्रीविद्यादेशिकप्रवर शिवसायुज्यप्राप्त आचार्य श्री दत्तात्रेयानन्दनाथ (पं. सीताराम कविराज) जी के आविर्भाव शताब्दी महोत्सव के अन्तर्गत प्रकृत सत्रयाग समायोजित है। पूज्यगुरुदेव श्रीविद्या के क्षेत्र में देश के प्रतिष्ठित एवं प्रामाणिक आचार्य के रूप में स्वीकृत हैं। प्रातः स्मरणीय धर्मसम्राट् श्री हरिहरानन्द सरस्वती (षोडशानन्दनाथ) श्री करपात्र-स्वामी जी के प्रधान शिष्य थे। पूज्य स्वामी जी ने ही आपको श्रीविद्या के अमूल्य ग्रन्थरत्नद्वय श्रीविद्यावरिवस्या तथा श्रीविद्यारत्नाकर की पाण्डुलिपि प्रदान की थी, जिसका सम्पादन तथा प्रकाशन पूज्य गुरुदेव के द्वारा सम्पन्न हुआ। गुरुदेव की साधना से पूज्य स्वामी जी सन्तुष्ट रहते थे तथा अनेक साधकों को गुरुदेव के सान्निध्य तथा मार्गदर्शन हेतु प्रेरित करते थे।

पूज्यगुरुदेव के द्वारा प्रतिष्ठित श्रीविद्या साधना पीठ आज सम्पूर्ण विश्व में श्रीविद्या के क्षेत्र में साधकों के मार्गदर्शन एवं प्रामाणिक ग्रन्थों की प्राप्ति का एकमात्र श्रद्धायतन के रूप में प्रतिष्ठापित है। पूज्य गुरुदेव के द्वारा स्थापित उपासना मण्डप में प्रतिदिन महागणपतिक्रम सहित श्रीचक्र की नवावरण पूजापूर्वक महापूजा सम्पन्न होती है। विशिष्ट पर्वों पर अत्यन्त निष्णात विद्वानों के द्वारा विशेष अनुष्ठान सम्पन्न होते हैं। साधकों के निवास हेतु आध्यात्मिक वातावरण, उत्तम श्रीविद्यासाधकों के निर्माण हेतु पाठशाला, गोशाला तथा अन्नक्षेत्र संचालित है। तन्त्रागम की शोधपत्रिका श्रीविद्यामन्त्रमहायोग (षाण्मासिक) का प्रकाशन निरन्तर जायमान है।

पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद तथा पराम्बा भगवती श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी की कृपा करुणा से पीठ के दीक्षित समस्त साधक/साधिकाएँ अपनी साधना से दिव्य अनुभूतियाँ प्राप्त कर रहे हैं तथा पीठ के संचालन में अपनी भूमिका को कर्तव्यस्वरूप मानकर निर्वहन कर रहे हैं।

यह चतुर्दश कोट्यर्चन सत्रयाग परम पवित्र माघ मास में भगवती भागीरथी के तट पर स्थित पीठ में आयोजित है। इस महनीय महोत्सव में आप समस्त साधक साधिकाएँ सादर आमन्त्रित हैं। श्रीयन्त्राधिष्ठात्री श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी पराभट्टारिका भगवती पराम्बा का अर्चन-पूजन, गंगास्नान और श्रीललिता कोटि-अर्चन महायज्ञ में सहभागी बनकर सत्रयाग समारोह को साफल्य मण्डित करके पराम्बा के अनन्त अनुकम्पा भाजन बनें।

## चतुर्दश सत्रयाग की विशेषता गुप्त पाँच क्रमों का शिक्षण-दीक्षण

श्रीविद्यारत्नाकर में पाँच क्रम प्रतिपादित हैं। शारदीय एवं वासन्तिक नवरात्र में पाँचों क्रम पीठ में अनुष्ठित होते हैं। काशीस्थ साधकों को तो इन विशिष्ट अर्चनों के ज्ञान का लाभ हो जाता है। परन्तु अन्यत्र प्रान्तों के निवासी साधकों को इनकी सुलभता नहीं होती है। श्री ललिता कोटि-अर्चन सत्रयाग में प्रायः सभी साधक सम्मिलित होते हैं। उनको भी इन सभी क्रमों का ज्ञान प्राप्त हो सके इस दृष्टि से इस कोटि अर्चन में पाँचों क्रमों का प्रतिदिन अनुष्ठान सम्पन्न होगा।

श्री महागणपतिक्रम, श्री ललिताक्रम, श्रीमातङ्गीक्रम, श्रीवाराहीक्रम एवं श्रीपराक्रम ये पाँच क्रम हैं। इन पूजन-क्रमों के जिज्ञासु साधकों को यथाविधि शिक्षित, दीक्षित करने की व्यवस्था रहेगी। श्रीयन्त्र-पूजा में पारङ्गत साधक-साधिकाओं का सम्मान भी होगा।

कोटि अर्चन सत्रयाग का अतिशय महत्त्व है। इस में सम्मिलित सभी साधक यजमान होते हैं- 'यजमानाः सर्वे सत्रेषु'। सभी साधक यज्ञफल के अधिकारी होते हैं। साधना के नियमों का पालन करते हुए अर्चन में सहभागी होने से पूर्ण फल की प्राप्ति होती है। अतः यज्ञ के समग्र क्रिया-कलापों में सहयोगी बनकर इस श्रीमाता-महोत्सव में पूर्ण योगदान करके सम्पूर्ण फल प्राप्त करें।

निवेदक

**प्रकाशानन्दनाथ**

अध्यक्ष


**श्रीविद्या साधना पीठ**

'शिव-सदन', गणेशबाग, नगवा, वाराणसी-२२१००५. फोन: ०५४२-२३६६६२२

ईमेल : shreevidyasadhanapeethvns@gmail.com

वेबसाइट : shreevidyasadhanapeeth.com